संचयन

भाग 2

कक्षा 10 के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

(द्वितीय भाषा)

1058

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मार्च 2007 चैत्र 1929

पुनर्मुद्रण
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
दिसंबर 2009 पौष 1931
नवंबर 2010 अग्रहायण 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
नवंबर 2014 अग्रहायण 1936
दिसंबर 2015 पौष 1937
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 पौष 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941
जनवरी 2012 पौष 1942

PD 80T RPS

© ***राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007***

₹ ......

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा ....
...
... द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-665-9

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा इसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	*विपिन दिवान*
सहायक संपादक	:	*मुन्नी लाल*
उत्पादन सहायक	:	....

आवरण एवं चित्र

कल्लोल मजूमदार

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल–केंद्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना–सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन कर सकेंगे। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय–सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक सोच–विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए परिषद् उनके प्राचार्यों एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ है जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में उदारतापूर्वक सहयोग दिया। परिषद् माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *प्रो़फ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रो़फ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनुपम मिश्र, *सचिव,* गांधी शांति प्रतिष्ठान, नयी दिल्ली
उर्मिला शर्मा, *अध्यापिका,* जवाहर नवोदय विद्यालय, जाफ़रपुर, नयी दिल्ली
प्रदीप जैन, *वरिष्ठ अध्यापक,* मॉडर्न स्कूल, बाराखंबा रोड, नयी दिल्ली
रवींद्र कात्यायन, *प्रवक्ता,* हिंदी विभाग, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई
वीरेंद्र जैन, *पत्रकार,* सांध्य टाइम्स, नयी दिल्ली
विशम्भर, *संपादक,* शिक्षा विमर्श, टोडी रमजानपुरा, जयपुर
पद्मजा प्रधान, *वरिष्ठ अध्यापिका,* डी.एम. स्कूल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., भुवनेश्वर
कामिनी भटनागर, *प्रवक्ता,* सी.आई.ई.टी, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

स्नेहलता प्रसाद, *पूर्व प्रो़फ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् विशेष रूप से आमंत्रित दिलीप सिंह, *रजिस्ट्रार,* दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा चेन्नई; उषा शर्मा, *प्रवक्ता,* डी.आई.ई.टी. मोती बाग नयी दिल्ली; शारदा शर्मा, *प्रवक्ता,* डी.आई.ई.टी. आर.के. पुरम् नयी दिल्ली की आभारी है।

परिषद् रचनाकारों के परिजनों / संस्थानों / प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने उनकी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

पुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् *कंप्यूटर स्टेशन इंचार्ज* (भाषा विभाग) परशराम कौशिक; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* सचिन कुमार; *कॉपी एडीटर* पूजा नेगी की आभारी है।

© NCERT not to be republished

भूमिका

कक्षा 10 हिंदी 'ब' पाठ्यक्रम के लिए पूरक पाठ्यक्रम के निर्माण में विद्यार्थियों की पूर्वार्जित भाषा योग्यता, बौद्धिक क्षमता एवं रुचि को ध्यान में रखते हुए यह प्रयास किया गया है कि इसके माध्यम से वे विभिन्न साहित्यिक विधाओं की विशेषताओं से परिचित हों और उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी विकसित हो। यह भी प्रयत्न किया गया है कि जो साहित्यिक विधाएँ नवीं कक्षा की मुख्य पाठ्यपुस्तक **स्पर्श भाग 1** और पूरक पाठ्यपुस्तक **संचयन भाग 1** में सम्मिलित नहीं हो पाई हैं, वे इस पूरक पठन की पुस्तक में आ जाएँ। इस दृष्टि से इस पुस्तक में कहानी, आत्मकथा एवं उपन्यास अंश को स्थान दिया गया है। इनके अध्ययन से अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थी इन विविध विधाओं की शैलीगत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

आज देश में संप्रदाय और असहिष्णुता की प्रवृत्ति के कारण हम भारतीय जीवन-मूल्यों तथा अपनी समन्वयवादी सामासिक संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। समुचित साहित्य की शिक्षा इस प्रवृत्ति को दूर करने और विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति स्वस्थ अभिरुचि विकसित करने में एक प्रेरक साधन बन सकती है। इस दृष्टि से पाठ्य-सामग्री के चयन और संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को केंद्र में रखा गया है–

पठन-सामग्री ऐसी हो जिसके माध्यम से विद्यार्थी लोक-परंपरा, साहित्य, कला, विज्ञान, समाज आदि के क्षेत्र में अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित हों और उसके प्रति उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो।

विधागत पाठ्य-सामग्री के चयन में रोचकता और विविधता का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है।

पठन-सामग्री के बोधन की दिशा में अध्यापक एवं विद्यार्थियों को स्पष्ट दृष्टि देने के विचार से प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ नीचे फुटनोट में दे दिए गए हैं जिससे पाठ को पढ़ते समय

अर्थ ग्रहण में कठिनाई न हो तथा प्रत्येक पाठ के अंत में बोध-प्रश्न भी दे दिए गए हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों के बोध का मूल्यांकन हो सकेगा बल्कि पाठ में निहित विविध शैक्षणिक बिंदु भी उभरकर सामने आ सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक में कहानी, आत्मकथ्य अंश और उपन्यास अंश को लिया गया है। इन विधाओं के द्वारा निम्नलिखित विधाओं की शैलीगत विशिष्टता से छात्र परिचित होने के साथ-साथ परिवार, समाज और सांस्कृतिक परिवेश की पृष्ठभूमि पर रचित रचनाओं से भी परिचित हो सकेंगे। इन पाठों द्वारा मुख्य रूप से यह स्पष्ट किया गया है कि–

हरिहर काका–घर वह जगह है जो अपनों के सुख-दुख में, आपद-विपद में, हारी-बीमारी में, हर्ष-उल्लास में एक-दूसरे के काम आना सिखाता है। एक-दूसरे की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने की सीख और अवसर देता है। धर्मस्थल इसी अपनेपन को, इसी सहृदयता को, सहयोग की इसी भावना को अपनों से कहीं आगे प्राणीमात्र तक विस्तार देने की समझ और संस्कार देता है।

यदि कभी किसी के मामले में घर और धर्मस्थल यानी परिवार और प्रभु दरबार दोनों ही अपनी भूमिका छोड़ अपने मूल स्वभाव को तिलांजलि दे दें, तो?

तब जो अराजकता और अनाचार, अन्याय और आपाधापी मचेगी, वह वैसी ही होगी जैसी हरिहर काका के संग हुई।

कथाकार मिथिलेश्वर ने *हरिहर काका* कहानी के बहाने ग्रामीण पारिवारिक जीवन में ही नहीं हमारे आस्था के प्रतीक धर्मस्थानों और धर्मध्वजा धारकों में जो स्वार्थलोलुपता घर करती जा रही है उसे उजागर किया है। हरिहर काका एक वृद्ध और निःसंतान व्यक्ति हैं, वैसे उनका भरा-पूरा संयुक्त परिवार है। गाँव के लोग कुमार्ग पर न चलें यह सीख देने के लिए एक ठाकुरबाड़ी भी है, लेकिन हरिहर काका की विडंबना देखिए कि यही दोनों उनके लिए काल और विकराल बन जाते हैं। न तो परिवार को हरिहर काका की फ़िक्र है न मठाधीश को, दोनों उन्हें सुख नहीं दुख देने में, उनका हित नहीं अहित करने में ही मगन रहते हैं। दोनों का लक्ष्य एक ही है, हरिहर काका की जमीन हथियाना। इसके लिए उन्हें चाहे हरिहर काका के साथ छल, बल, कल का प्रयोग भी क्यों न करना पड़े। पारिवारिक संबंधों में भ्रातृभाव को बेदखल कर पाँव पसारती जा रही स्वार्थ लिप्सा और

धर्म की आड़ में फलने-फूलने का अवसर पा रही हिंसा वृत्ति को बेनकाब करती यह कहानी आज के ग्रामीण ही नहीं शहरी जीवन का भी यथार्थ उजागर करती है।

सपनों के-से दिन–शिक्षा काल में पढ़ना ही विद्यार्थी का लक्ष्य होता है। प्रायः हर विषय की कोई न कोई किताब पढ़नी होती है। इस पढ़े हुए में से बहुत कुछ ऐसा होता है जो पूरी कोशिश के बावजूद भी याद नहीं रहता और बहुत कुछ ऐसा भी होता है जो एक बार पढ़ लेने के बाद हमेशा हमारी स्मृति में बस जाता है।

प्रस्तुत आत्मकथांश को दूसरी कोटि में रखा जा सकता है जिसे पढ़ने के बाद भुला पाना कठिन ही नहीं असंभव हो जाता है। यह अंश बताता है कि समाज में कुछ लोग ऐसे भी थे जो शिक्षा के महत्त्व से पूरी तरह अनजान थे। ऐसे लोग न केवल खुद अनपढ़ रहे बल्कि उनके कारण उनके परिवार की भावी पीढ़ियाँ भी निरक्षर रह गईं।

इस पाठ के स्मृति में बने रहने की जो सबसे अहम वजह है, वह यह है कि इसे पढ़ते हुए पाठक को बार-बार ऐसा लगता है कि जो दिनचर्या मेरी थी, जो शरारतें, चुहलबाजियाँ, आकांक्षाएँ, सपने मेरे थे, जो मैंने आज तक किसी को बताए भी नहीं, वे लेखक को कैसे मालूम हो गए और उसने बिना मुझसे मिले ही मेरी दैनंदिनी कैसे लिख ली?

टोपी शुक्ला–अपने वे होते हैं जिनसे अपनापन मिले। फिर भले ही वह अपना, अपने घर का, अपनी जाति का, अपने धर्म का हो या न हो। जिसमें अपनापन न मिले वह भले ही रातोंदिन साथ भी रहता हो, फिर भी कम से कम कोई बच्चा तो उसे अपना नहीं मान सकता। चूँकि बचपन प्रेम के रिश्ते के अलावा किसी और रिश्ते को कुबूल नहीं करता। बालमन किसी स्वार्थ या हिसाब से चलायमान नहीं होता। निश्छल वृद्ध मन की भी कुछ-कुछ यही दशा होती है। राही मासूम रज़ा के उपन्यास 'टोपी शुक्ला' के इस अंश के पात्र भी अपनेपन की तलाश में भटकते, अटकते नज़र आते हैं। कथानायक टोपी के अपनेपन की पहली खोज पूरी होती है अपने दोस्त अज़ीज़ इफ़्फ़न की दादी माँ में, अपने घर की नौकरानी सीता में और अपने ग्रामांचल की बोली-बानी में।

कहते हैं 'प्रेम न माने जात-विजात, भूख न जाने खिचड़ी भात'। टोपी को भी इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि जिसके आँचल की छाँव में बैठकर वह स्नेह का अपार भंडार पाता है, प्रेम के सागर में गोते लगाता है उनका रहन-सहन क्या है, खान-पान क्या है, रीति-रिवाज क्या है, सामाजिक हैसियत क्या है?

हालाँकि टोपी के पिता एक जाने-माने डाक्टर हैं, परिवार भी भरा-पूरा है, घर में किसी भी चीज़ का अभाव नहीं था फिर भी वह लाख मना करने के बावजूद इफ़्फ़न की हवेली की तरफ़ बरबस खिंचा चला जाता है। काश! उसे वहाँ जाने से रोकने वाले परिवार के लोग कभी इस बात का भी पता लगाने की जहमत उठाते कि टोपी जैसा आज्ञाकारी बालक आखिर उनकी एक यही हिदायत क्यों नहीं मानता!

आशा है यह पुस्तक विद्यार्थियों को रुचिकर लगेगी और उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाने के साथ-साथ विभिन्न जीवन मूल्यों के प्रति समझ भी उत्पन्न कर सकेगी।

© NCERT not to be republished

पाठ सूची

	आमुख		*iii*
	भूमिका		*vii*
1.	**मिथिलेश्वर**	– हरिहर काका	1
2.	**गुरदयाल सिंह**	– सपनों के-से दिन	20
3.	**राही मासूम रज़ा**	– टोपी शुक्ला	32
	लेखक परिचय		45

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished